Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

५४६९

६६८

No. क

Title गर्भगीता

Author

Extent २६ पत्र Age

Subject अध्यात्म (वेदान्त)

गर्भगीता
नं० ५६८

5479
19

ॐश्रीगणेशायनमः॥अथगभंगी
तालिख्यते॥ॐअर्जुनश्रीकृष्ण
भगवानजीपहलाप्रसनक
रैहै॥पाण्डवनकेविचारते॥श्री
कृष्णभगवानजीकावचनहै

गा॰
२

जैसा तौ ईस गर्भगीता का वि-
चार कहै है॥ सो प्रकृष वज्र रोग
भैसै न आवैगा॥ अर्जुनवाच॥
हे श्रीकृस्न भगावानजी॥ इह॰
प्राणी गर्भ विषे जा आवै है॥

सोकिसहर्षकरआवैहै॥ हेप्र-
भुजी॥ जबजनमलेतेहै॥ तबइ-
सकोजराआदिकरोगलग-
ताहै॥ फेरमृतहोताहै॥ हेस्वा-
मीउहकोनकर्महै॥ जिससेइ-

गा· २

हजीवजनममरनतेरहित·
हैवै ॥श्रीभगवानुवाच॥ हेअ·
र्जुन॥ हेजोमानुषदेह॥ सोअं
धाअरुमूकहै ॥ अहंसंसार·
कोप्रक्रितीसाथप्रीतकरै

है॥ अहंमकी रही चिंतवना·
रहितीहै॥ किपेहपदारथमै
पाइयाहै॥ अहारुहपाउगा॥ पे
हचिंतवनाइसप्राणीकेमन
नेउनरतीनहीं॥ आठपदारमा·

गी. ३

इयाकोदीमांगताहै। यावङ्ता
जीवनामांगताहै॥ इनावाता·
करकेवारंवारजनममरता
रहताहै॥ गरमांविचडुःखपाव
ताहै॥ अर्जुनवाच॥ इस्त्रीकस्म·

भगवानजीइहमनममताह्रा·
धोकोत्यागीहै॥तस्माइसकीस·
कोहै॥पइमैनपंजाकेवसहै॥
कामक्रोधलोभमोहअहंका
र॥अहजोइतपांचोमेसहका

गी॰
४

रविऊतनवलीदै ॥ सोकवाजुतन
है ॥ तिसकरमनवसहोईजो ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ हेअरजुनतप॰
हमनातिहचैकरहाथीकोम्या
रहे ॥ तिसलाइसकोसकतेहै

मनपंचाकेवसहै॥ हेकार्यना
मैश्रेष्टहै॥ हेअर्जुन॥ जैसेमहाथी
कोंडेकेवसहोताहै॥ सोमनहा
थीकेवसकरनेकों॥ गियान
कुंडाहै॥ हेकारकरनेनेहजी

गी॰
५

वनरकमेंपड़ताहै॥अर्जुनउवाच
हेश्रीकृस्नभगवानजी॥एकजन
मायेनामकेलीयेवनमेंजाफि
रतेहैं॥एकवैरागीभएहैं॥एक
जटावांधेहैं॥एकधर्मकरते

है॥ तिना विषे तूं केसे जानीय॥ जो वैल वह सो कव नेह॥ श्रीभगवानुवाच॥ हे अर्जुन तप के मेरे नाम के लीए वनो मे फिरते है पक मे मासो करावने ह॥ प

गी·
६

कोसिरपरजटाबांधतेहैं॥एक
भस्मलगावतेहैं॥एकतीर्थक
रतेहैं॥तिनोमेंहंनहीं॥काहेतेति
नोविषेअहंकारहै॥इनकर्मे·
एरहमनइलेपहैं॥अर्जुनवाच

6

हे श्रीकृस्नभगवानजी॥ उह्नोके
नपापहै॥ रसकारसौमरजा
नीहै॥ अरुउह्नोकोनपापहैजि
सकारपुत्रमरतनैहै॥ अरुतिसके
कैकवनपापतेहोताहै॥ श्री॰

गी.
७

भगवानुवाच॥ हेअर्जुनतेजोअग्नी
नीकिसेनेकरजउलावताहै॥
अरुहेतानही॥ इसपापकरइ
सभीमरतेहै॥ अरुजोकिसीके
अमानतरषीहोईपचालेतेहै

तिनाकेपुत्रमरतेहै॥अरुजोकि
सैकाकारजाकिसैरोगाचवरआई॥
पडेजबातौकहैमैनेराकारज
सभनातेपहिलेकरोगे॥जब·
समाआईपडेतबतिसकाकार

जेनहीकरते॥ऐसपापतेनडुम
कहेहोताहै॥इहबडापापहै॥अर्जु
नप्रश्नकरतेहैं॥हेश्रीकृष्णभ
गवानजी॥कोनपापतेमनबुध
मदीवैराग्यरहितहै॥किसपा

पतेपायेकाजनमहोताहै॥ भसै
काजनम॥ डूकाजनमहोताहै
किसपापकरपावताहै॥ ब्रहि
बिल्लीकाजनमकिसपापतेहो
ताहै॥ श्रीभगवानजीकहेहै॥ है

मु·
२

अर्जुनजोमानुषकंन्याकाप·
दारथलेतेहै॥ अरुसाधबालक
कोदोषीहै॥ सोमानुषसदारो
गीरहतेहै॥ अरुजोवैसेविको
रवासतेमदरापानकरतेहै॥

सोइ इंद्रकाजनमपावतेहै॥ब्रह्

जोकुटीगंगामेमरतेहै॥कुंडे

साधमरतेहै॥सोरुद्रकाजनम

पावतेहै॥सोईवनाकिकरपह्

लियापघाहिलतेहै॥पीछेप

पा॰
१०
10

रमेश्वरकेअर्थदेनेहैदानकरे
सोवैलोकाजन्मपावतेहै॥अ
हरसत्रौकाजन्मपावतेहै॥अ
हजोमानव।अपनाकुटंबोवस
नदानकरातेहै॥सोरश्मौजन्म

पावतेहै॥ पग्रुलाभग्रोरतहो
वै॥ पदज्ञनमकदीयातहो॥
श्रगनतपक्तैतैहै॥ हेस्त्रीकृकमल·
भगवानजी॥ पकमानुषकोत
मसनादीयाहै॥ तिनकोतपन

गा· ॥

कीयाहै॥ इकनाहे हाथीघोडी·
दीयेहै॥ तिनकोकोनपुनकीया
है॥ श्रीभगवानकहैहै॥ हेअर्जुनजि
नासुवर्णदानकीयाहैसोतिन
कोहाथीघोडेवाहनमिलतेहै॥

केस्यपदानपरमेश्वरनिमित्तकरते
हैं॥९इहषकाजनमपावतेहै॥ इहभ
गवानजीजिनांहंदरंविचित्रदेह
हैंतिनकोतन९नकोयाहै॥ पक
नाघरमेंतानिहै॥ पकांवेघ्यावात

गा· १२

12

है तिन को नंभुतन कीया है ॥ हे श्र·
जैन जिना अ्रन दान कीया है ॥ ति
नकां सदा सुरूप होवै है ॥ जिना
विद्यादान करी सो विद्यावान हो
वै है ॥ जिनां संतां अ्रां को सेवा क

हैं॥ सो उक्त बात न होने है॥ हे भगवा
न एकनाको पत न नाल थी न हो वै
है॥ एक इस आयास प्री करते है॥
तिनकी को नगाते है॥ है स्वजन
राजपाट धन इस आयाम भनाम

ग॰ १२

रूपहै॥ मेरीभगवानकानामहनहीं॥ है
भगवानराजपदकिसयरमेनं॰
मिलेहै॥ वियाकोनयथमेनोमिले
है॥ हेअर्जुनजोप्राणिओकासो
मैतिमकाममभगवाननपकरतेहै॥

देहत्यागते हैं ॥ सो राजा होता है ॥ जो
गुरु की सेवा करे सो विद्यावान
होवे है ॥ हे भगवान एकनाकोध
न अचिंतही मिलता है ॥ एक सा
अवलोगोंते रहित होवे है ॥

गा.
१४

सोकोनग्रनते। हेअर्जुनजिनाः
गुपनदानकीनाहे उनकोआंचे
नधनहीमिलताहै॥ जिनापरमे
श्वरअर्पनाईयाकाराजसवा
यियाहै॥ सोरागानेरहितहोतेहै

हे भगवान कोन पाप ते अमली
होवे है। बाला कोन पाप ते। कुष्टी
कोन पाप ते होवे है। हे अर्जुना
जो अपने कुल को सत्रो सरापा
मन करते है॥ सो अमली होवे है

ग॰
५
15

जिनागुरुसेविद्यापढीब्रह्मक
रजानेहैसोबोलेह्रोवेहै ॥ गुरुको
पवडापापहै ॥ जिनगउचानक
री ॥ सोकुष्टीहोतीहै ॥ रहजनी
कबीनहोमकनो ॥ हभागवान॰

जी। कोमेकोदेहमेरकेतकावल
होताहैलोकेनपापते। एककोढी
ढोहोवैहै॥ एकनाकोषरवाउहो
ताहै॥ एकअंधेहोताहै। पिंगले
कोनपापतेहोतेहै। एकवाल

ग॰ विषवाहोतेहैकोनपापतेहोते
१६ है॥ हेअर्जुनजोसदाक्रोधवान
10 रहतेहै॥ तिनकोरकतविका
रहोताहै॥ जोकुचैलरहतेहैसे
दरिद्रीहोतेहै॥ जोकुकरमोद्या

लगा को दान देते है ॥ तिन के घर
उवाउ होतो है ॥ जो परायी स्त्री
को नैणो देषते है ॥ ग्रह की स्त्री·
से कुद्रिष्ट करै है ॥ सो अंधा होता
है ॥ जिना गवो ब्राह्मण को लात

ग. मारीहै। सोतनघडीहीकोतीहा
१८ वैलंगाउपिंगलाहोताहै। जोर
स्त्रीअपनाग्रहस्थकोछोडपरा
येग्रहस्थोमेसंगकरतीहै। सोव
लविधवाहोतेहै॥ हेभगवान्

ई श्री हुकमजी । तमपारखलरो ।
तमारेकोमेरीनमस्कारहै । श्रा
गेमेतमारीकोमनवंधीकरजा
नताथा । अवमेतमारेकोपरमे
साहुयकरजानताहो । हेपरे

ग· ब्रह्मजी गुरुदीक्षा केसी होवे है

१८ कृपाकर के हो जी ॥ हे ब्रह्मन ॥ तू

18 धंन है धन है ॥ वह घरा भी धंन है ॥ ते

रे माता पिता भी धंन है ॥ जिनका

ते ऐसा पुत्र है ॥ जिन गुरुदीक्षा·

पुछे है । है प्रजेन समोरे संसार का उ
हुजनातनाथ है ॥ वेदिया का उ
हुवनारसी ॥ अहुचारो बरनो का
गुरु ब्राह्मण है ॥ ब्राह्मण का गुरु
संन्यासी ॥ उसको कहे है ॥ जिनस

गी
१९
19

वैकामनतिब्रागाकरमैरोविषे
मनजोदियाहै। सोब्रालाणजग
तप्रलहै। हेअर्जुनएहबातध्या
नदेकरसुणानेकोहै। गुरुकेसा
कैरी। जिनसर्वेइंद्रियांजीतीयां

है॥ जिसकेकोपसैंसबसंसारदुखिरह
पतजरोग्रावताहै॥ सर्वजगतमे
दामहै॥ ऐसागुरुकरेजोपरमेश्व
रकेजाणनेवालाहोवै॥ तिसगु
गुरुकीपूजासर्वनराकरेहै॥ है

गा॰ अरजनजोगुरुकाभगतहै॥ सोमे
२॰ राभगतहै॥ जोप्यारीगुरुकेसन्तु
विहाकरमेराभजनकरतेहैं॥
तिनकाभजनकरनासफलहै
जोप्यारीगुरुकेवमावदेहै॥ तिन

कोसपतग्रामसाउकेकाग्रापरेहो ·
ताहै॥ तिनगुरुनेवेमातग्रानी
कादासनकरताजोमननाही॥
तिनकादासनचेअलकेनल
है॥ जोग्रारहसतोगुरुनेविनाहै

गा॰ ऐसो चंडाल के समान है॥ जिसते
११ रामदास का भाडा है॥ ऐसे वेषः
५ गंगाजल पाइये सो अपवित्र हो
वै है॥ ऐसी नराज्ञातें विस्वावक
भजते है॥ सदा अपवित्र होताद

तिसकेहाथकादीआदेवताभी
नहीलेते॥ तिसकेसरवकारम
तिसफलहै॥ गृहतेबसुखप्रा·
नीकाजनमभी तिसफलहै॥
गृहतेबसखप्रानीकाजनम·

ग
र

निसफलहै॥ कुकरा॥ सुकरा॥ गा
दभ॥ काका॥ १ नसबेजोतोते
सर्पजोतघोटीहे॥ १ नसभन
तोघोटाहे॥ ३ होमातन्नषजोपुरु
नहोयारता॥ गृहनीतिबिनाया

तनहोहोतो। अवसतरकाको

जावेगा। ७ रुद्रीध्यांविनाप्रा

णीकेसर्वकर्मानिष्फलहो

तेहैं। हेअर्जुन। चारवरनोंको

मैनेभातकरतीयायहै॥

ग०
२२

43

तैसेग्रहस्थाकेगृहकीभगत•
करतौ॥ सेवाकरतौगुराकीजा
गहै॥ सर्वतीर्थौमैंगंगाजीबड
है॥ सर्ववृतौमैएकादसीवड
तैसेहै॥ तैसेसमस्तभक्तरमा

मै ग्रहसेवा उतम है । गुरुदीख्या
विनाप्राणी पसु जो न पावे है ।
जो धरम भी करता है सो पसु जो
नी फल भोगता है । क्यो पामी मे
भ्रमता रहता है । इस्त्री कुल •

ना.
२४

24

भगतजीग्रहहीतणाकावहुतैहै
हैअर्जैनथंतेजनमहैतणा।जित
ईहपाछियाहै।उरदिह्यादेलो
श्रवहै॥हरीराम॥ईवग्रवतो
कोकैहै॥पहवारोवहतोकोज

पत्राश्रेष्टहै॥ हेअजनतेजोग्रहको
सेवाकरेहै॥ सोमेरीसेवाकरता
है॥ मेरीउसपरप्रसंनताहै॥ ज्यो
रासीतेछुटजावेगा॥ जनममर
नतेरहितहतनरकनहीभोगता

गु-
१५

जो प्रानी गुरु सेवा करे नहीं ॥ सो
साठि तीन करोउ बरस नरक भो
गता है ॥ जो गुरु सेवा करता है ॥
तिसको करोड़ अस्वमेध जग का·
कोई का फल है ॥ गुरु की सेवा मे

रीसेवाहै॥ हृष्टजेत॥ ऐसेमेरेतेरेसं
वादकोजोग्रानीपडै ऐनेकमा
वैसेसोगार्भहैवितेवृचैरा॥ औरा
सोकटजाईगी॥ ऐसीनेहसपाट
कानामगार्भगीताहै॥ श्रीकृस्न

गी·
१९

महाराजकेभावेते॥ अर्जुनेनेश्र
वणकरीहै॥ गृहदीआलैलीउ
नसकारमेहै॥ तिसकाफलनरक
तेच्योरासीतेजीवबचरहैता·
है॥ भगावंतप्रसंनहोतातहै॥ इति

२०

ओम ॥ इति श्रीरामगीता संपूर्ण
म ॥ शुभमस्तु प्रजाभ्यां ॥

